Journal of Research in Education

(A Peer Reviewed and Refereed Bi-annual Journal)

(SJIF Impact Factor 5.196)

St. Xavier's College of Education

(Autonomous)

Digha Ghat, Patna, Bihar - 800011

VOL.12, No.2 | DECEMBER, 2024

SXCE (AUTONOMOUS), PATNA

डॉ. अजेय कुमार
सहायक प्राध्यापक
विभागाध्यक्ष, हिन्दी
एम. एम. कॉलेज बिक्रम
पाटलिपुत्र विश्वविद्यालय, पटना
Email:- Ajay.Kumarkrishnakabir@gmail.com

3

आधी आबादी: अतीत-वर्तमान-भविष्य

सार

कला, जब विज्ञान का स्पर्श पाकर संवरने लगती है, तथा विज्ञान, जब कला के आँगन में, मानवमूल्य से जुड़ जाता है, तब वास्तविक एवं प्रामणिक रूप से विद्या प्रासंगिक हो जाती है। जिस प्रकार कला एवं विज्ञान समावेशी विकास हेतु एक दूसरे के पूरक हैं, उसी प्रकार प्रकृति की योजना में नारी एवं पुरूष एक दूसरे के पूरक हैं। यह पूरकता जब खंडित होती है, तब किसी जयशंकर प्रसाद जैसे मनीषी, कवि की चिंता व्यक्त होती है–

तुम भूल गए पुरूषत्व मोह में
कुछ सत्ता है नारी की

विश्वास है २१वीं सदी, संपूर्ण विकास, सतत विकास, एवं समावेशी विकास की सदी प्रमाणित होगी। सांस्कृतिक लड़ाईयाँ एक–दो–दिनों में नहीं, वर्षो में पूर्ति होती हैं। नारी सशक्तिकरण एक सांस्कृतिक चुनौती भी है, एवं ऐसे सामाजिक सांस्कृतिक बदलाव की आवश्यकता है जहाँ–नर और नारी समान हों।

धर्म, जाति, अर्थ और काम के स्तर पर विभेद न हो। प्रत्येक मनुष्य की पहचान एक व्यक्ति के रूप में हो, न कि पुरूष और महिला के रूप में। एक मौका मिलना चाहिए, जहाँ से राष्ट्र-निर्माण की नींव मजबूत हो। यह सही है कि सभ्यता के विकास में पुरूषों ने केन्द्रीय भूमिका निभायी है; प्रकृतिक संघर्ष के बीच परन्तु क्या उस 'भारती' को भूल सकते है, जिन्होने जगत् गुरू शंकराचार्य को पराजित किया था। अत्री और अनुसइया के त्याग को भूला जा सकता हैं। बगैर सीता के राम भी पूरे नहीं हैं।

मूल शब्दः *आधी आबादी, कला विज्ञान, मानवमूल्य, समावेशी विकास, सतत विकास, भारतीय संस्कृति, अर्द्धनारीश्वर*

आधी आबादी एवं सांस्कृतिक आधिपत्यवादः यह सत्य है कि पितृसत्ता, वैचारिक स्तर पर आरोपित होती है तथा व्यावहारिक स्तर पर शोषण का उपकरण बन जाती है। यह एक ऐसी सूक्ष्म सांस्कृतिक प्रक्रिया है, जिसमें नारी, स्वंय को परमेश्वर रूपी पति की दासी समझने लगती है। इस अनुकूलन को ग्राम्शी, सांस्कृतिक आधिपत्यवाद २ कहते हैं। रूसो भी नारी को बौद्धिक गतिविधि के योग्य नहीं मानते। प्रसिद्ध नारीवादी चिंतक सिमोन द बोउबार का निष्कर्श है कि, स्त्री एवं पुरूष पैदा नहीं होते, बनाए जाते हैं। ३

जब यूरोप में आधी आबादी, औद्योगीकरण के दौर में घर से निकलकर काम करने लगी थी, तब वहीं भारतवर्ष की आधी आबादी, घर में कैद अशिक्षा से ग्रस्त थी। सामंतवाद की गुलामी के साथ ब्रिटिश सत्ता का अब्रिटिश चरित्र, नारी समाज को अंधकार से निकलने में बाधक बना रहा। भक्ति आंदोलन के संत तुलसीदास ने संपूर्ण अनुभव का सार लिखा है-

कत विधि सिरिजि नारी जग माहिं
पराधीन सपनेंहुँ सुख नाहिं।। ४

स्मृतियों में कहा गया- 'न नारी स्वतंत्रयमहर्ति' अर्थात् नारी स्वतंत्र रहने योग्य नहीं है।

चर्चित नारीवादी-(वंचित समाज की लेखिका) निर्मला पुतुल की वेदना प्रासंगिक है-

Journal of Research in Education ISSN (P): 2347-5676 | ISSN (O) 2582-2357
DECEMBER - 2024 | VOL.12, No.2

तन के भूगोल से परे
एक स्त्री के
मन की गांठे खोलकर
कभी पढ़ा है तुमने,
उसके भीतर का खौलता इतिहास। ५

इतिहास के विकास क्रम पर नजर डालें तो यह सुखद आश्चर्य है कि ऋगवैदिक समाज में सभा, समिति और विदथ जैसी संस्थाओं में महिलाओं की समान भागीदारी रही है।

वैदिक मंत्रों को रचने वाली घोषा एवं अपाला जैसी विदुषी महिलाओं की चर्चा स्मरणीय है। परंतु उत्तर वैदिक समाज से लेकर सामंती प्रभुत्व तक, स्त्री विमर्श के प्रति व्यावहारिक धरातल पर भारतीय समाज पीछे रहा।

दार्शनिक पक्षः स्त्री विमर्शकारों को चुनौती, दार्शनिक जड़ सिद्धातों से भी मिली। ध्यातव्य है कि अधिकांश दार्शनिक चिंतन पुरूष मानसिकता से ग्रसित रहा है। जर्मनी के दार्शनिक हीगल ने महिलाओं हेतु 'प्राइवेट स्फीयर' तथा पुरूषों हेतु 'पब्लिक स्फीयर' निश्चित किया। ६ प्लोटो, अरस्तु एवं देकार्त ने भी नारी को, परिवार-प्रजनन-एवं मातृत्व के साथ जोड़कर संकुचित दृष्टिकोण को बढ़ाया। सिगमंड फ्रायड (मनोविश्लेषणवादी चिंतक) का कथन है कि ७ -''इतने वर्ष काम करने के बाद भी मै'' यह नहीं समझ पाया कि स्त्री आखिर चाहती क्या है? नारी रहस्यमयी इसलिए है कि जाने अनजाने सभ्यता के इतने परतों में दबी है कि उसकी इच्छाओं-संस्कारों-विचारों-आग्रहों का अनुमान लगाना मुश्किल है। निर्मला पुतुल लिखती हैं ८ -

पढ़ा है कभी उसकी चुप्पी की दहलीज पर बैठ
शब्दों की प्रतीक्षा में उसके चेहरे को?
अगर नहीं तो, फिर क्या जानते हो तुम,
रसोई और बिस्तर के गणित से परे
एक स्त्री के बारे में।

महात्मा बुद्ध ने भी संघ में नारियों के प्रवेश के प्रति अनिच्छा जताई। कथाकार यशपाल, दिव्या उपन्यास ६ (१९४५) में संकेत देते हैं कि–बौद्ध धर्म, वर्णव्यवस्था के स्तर पर क्रांतिकारी है, नारी स्वतंत्रता एवं सार्थकता के प्रश्न पर नहीं।''

यशपाल ने दिव्या उपन्यास समर्पित किया है– १० संपूर्ण नारी समाज को ''तुमको निरंतर पराभव और अपमान सहकर भी, जिसका जीवन दीप स्नेह से प्रज्वलित है।''

थॉमस आटवे मानते हैं कि– स्त्री के बिना, पुरूष क्रूर ही रहता''। सांस्कृतिक स्तर पर नारी को शक्ति रूपा कहा और माना गया है– ''या देवी सर्व भूतेशु शक्ति रूपेण संस्थिताः''।

संस्कृत का यह श्लोक केवल शक्ति की अराधना नहीं है, समस्त नारी जाति के योगदान की स्तुति है। यह स्तुति संकेत देती है तथा आज की पीढ़ी को संदेश भी। संदेश यह कि–समाज, अपने निर्माणकर्ता को भूल नहीं सकता।

वर्तमान एवं भविष्य की चिंताः आजादी के बाद भी संवैधानिक विकास के साथ–साथ अनु. 15,16,23,39,IPC 376 498B, विशाखा वाद, तथा समय समय पर सुप्रीम कोर्ट के निर्देश आते रहे हैं, परंतु समय–समाज–धर्म–अर्थ एवं राजनीति का सत्य यही है कि नारी को अभी भी समान अधिकारों हेतु संघर्ष करना पड़ रहा है–

आज भी आदम की बेटी, हंटरों की जद में है।
हर गिलहरी के बदन पर, धारियाँ होंगी जरूर।।

मौर्यकाल में सुंदर बालाओं को विषकन्या बनाकर जासूसी कराई जाती थी। इस अमानवीय कुतर्क को धर्म एवं मुक्ति से जोड़ दिया गया। आम्रपाली एवं वासवदत्ता जैसी नृत्यकला में प्रवीण नगर वधुओं को देह यातना भुगतनी पड़ी।

सतीत्व के नाम पर जौहर को गौरवान्वित किया गया। शास्त्रों, एवं पुराणों का तर्क देकर नारी को, समाज, लक्ष्मण रेखा की याद दिलाने लगता है।

वर्तमान लोक सभा में भी महिला संसद सदस्यों की संख्या निराश करती है। आधी आबादी की अस्मिता एवं सुरक्षित अवसर हेतु संविधान तथा कानून की धाराओं (१ जुलाई २०२४ से लागू भारतीय न्याय संहिता, तथा भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता) में अनेक प्रावधान संरक्षित हैं, किन्तु महिला पर अत्याचारों में कमी नहीं आ रही है। निर्भया, मणिपुर, हाथरस से लेकर बंगाल तक (राष्ट्रीय अपराध रिकार्ड ब्यूरो, NCRB की रिपोर्ट) ११

'जाति और योनि के कटघरे' लेख में डॉ लोहिया १२ ने नारी को गुलाम बनाने वाली नैतिकता पर वैचारिक प्रहार करते हुए कहा है– ''आध्यात्मिकता निरपेक्ष है, किन्तु नैतिकता सापेक्ष है।'' प्रत्येक युग तथा प्रत्येक मनुष्य को अपनी–अपनी नैतिकता खोजनी चाहिए।

प्रश्न यह है कि क्या हम नैतिकता की कसौटी पर खरे उतरे हैं। सीता को भी अग्नि परीक्षा से गुजरना पड़ा, वहीं कभी देवराज इन्द्र की कुटिलता के कारण अहिल्या को अपमान का विष पीना पड़ा। द्वापर युग में द्रौपदी को द्युत क्रीड़ा में दांव पर लगा दिया गया, वहीं धृतराष्ट्र के अंधत्व का साक्षी बना समाज द्रौपदी के चीरहरण से भी द्रवित नहीं हुआ। सिद्धांतकारों ने नारियों को पराधीन रखने हेतु अनेक तर्क गढ़े। उत्तर वैदिक काल से लेकर उत्तर आधुनिक काल के वृद्ध होते पूंजीवाद तक महिलाओं के प्रति विचार को देखा जा सकता हैं–

खुले–खुले बदन पर
साबुन का झाग हो गई है औरत
पान पराग हो गई है औरत।।

साहित्य एवं आधी आबादीः राष्ट्रकवि मैथिली शरण गुप्त, नारियों की दुर्दशा, पुरूष मानसिकता एवं समस्या के समाधान पक्ष को भारत भारती १३ (१९१२–१३) में व्यक्त करते हैं–

- निज दक्षिणांग पुरीष से रखते सदा हम लिप्त हैं।
  वामांग में चंदन चढ़ाना चाहते, विक्षिप्त हैं।
- नारी पर नर का कितना अत्याचार है,
  विद्रोह मात्र ही अब इसका प्रतिकार है।

➢ सबसे प्रथम कर्तव्य है शिक्षा बढ़ाना देश में।।

आँचलिक उपन्यासकार फणीश्वर नाथ रेणु, मैला आँचल (१९५४) १४ उपन्यास, में रोग के दो कीटाणु की चर्चा करते है- ''रोग के मुख्य कीटाणु है- अशिक्षा और गरीबी। उपन्यास के पात्र एक बुजुर्ग कहते है, डॉ. प्रशांत से-

''हुजूर लड़की जात है, बिना दवा के ही ठीक हो जाएगी।''

अमीर खुसरो तथा विद्यापति भी नारी पर शोषण एवं लिंग भेद के प्रश्न को प्रासंगिक बनाते है-

काहे को ब्याहे परदेस
सुन बाबुल मोरे। १५ (अमीर खुसरो)
पिया मोरे बालक, मैं तरूणी गे तथा,
पुरूष निठुर हिय परिचय भेल १६ (विद्यापति)

मध्यकालीन सूफी चिंतक मलिक मोहम्मद जायसी अपनी प्रबंधात्मक रचना, पद्मावत (१५४०) में नागमती वियोग प्रसंग में लिखते है-

फिर फिर रोई कोई नहीं डोला
आधी रात विहंगम बोला। १७

कृष्ण भक्त कवि एवं अष्टछाप के जहाज सूरदास की गोपियाँ, सामंती-पुरूषवादी मानसिकता के प्रतीक उद्धव जी से प्रश्न करती हैं-

उघो, मन न भए दस बीस १८

नवजागरण के चिंतकों एवं भारतेन्दु मंडल के रचनाकारों ने भी विधवा समस्या को व्यक्त किया है-

विधवा विलपै नित धेनु कटै
कोई लागत हाय गोहार नहीं।

राष्ट्रकवि मैथिली शरण गुप्त ने 'यशोधरा' के माध्यम से नारी अधिकारों एवं स्वाभिमान के प्रश्न को प्रासंगिक बना दिया है-

सखि वे मुझसे कहकर जाते
कह तो क्या मुझको वे अपनी पथ बाधा ही पाते। १९

नारी के नैसर्गिक अधिकारों एवं जीवन मूल्यों को अपेक्षित सम्मान नहीं मिला है। वास्तव में स्त्री विमर्श, स्त्री एवं पुरूष के बीच व्यापक संश्लिष्ट असमानता की खाई को पाटकर, लिंग निरपेक्ष होकर, समान अवसर एवं समान प्रतिष्ठा देने की रचनात्मक कोशिश है। यह समय एवं समाज की ज्वलंत आवश्यकता है। सुमित्रानंदन पंत कहते हैं- २०

योनि नहीं रे नारी, यह भी मानवी प्रतिष्ठित
उसे पूर्ण स्वाधीन करो, वह रहे न नर पर अवसित।।

भारतीय एवं पश्चिमी नारीवादी आंदोलन : भारतीय एवं पश्चिमी नारीवादी आंदोलन में भी अंतर देखा जा सकता है:- पश्चिम में नारीवादी आंदोलन तब प्रारंभ हुआ जब वहाँ महिलाओं को कुछ मूलभूत अधिकार प्राप्त थे तथा कुछ समय बाद अन्य राजनीतिक, सामाजिक तथा आर्थिक अधिकार मिलने प्रारंभ हो गए।

परंतु भारत में महिलाओं को बुनियादी आर्थिक एवं राजनीतिक अधिकार प्राप्त करना शेष था। अतः स्वाभाविक रूप से दोनों आंदोलनों की मांगों में भिन्नता है। इस संदर्भ में राजनीतिक-सामाजिक एवं आर्थिक इच्छा शक्ति के साथ पुरूष भी सहयोग दे तथा सत्ता संरचना भी अपनी मानसिकता बदले। नारियाँ गुहार लगा रही हैं-

पढ़ा गया हमको
जैसे पढा जाता है कागज
भोगा गया हमको
बहुत दूर के रिश्तेदारों के दुःख की तरह
एक दिन हमने कहा
हम भी इंसान हैं।
हे परम पिताओं, परम पुरूषों
बख्शो, बख्शो, अब हमें बख्शो।।

शासकीय प्रयास एवं चिंता: भारत में लगभग १९०० ई. में महिलाओं के राजनीतिक अधिकारों को लेकर आंदोलन प्रारंभ हुए।

आजादी के तीन वर्षो के बाद ही १९५० में संवैधानिक रूप से महिलाओं और पुरूषों को एक साथ ही भारतवर्ष ने मताधिकार

प्रदान किए। संविधान के नीति निर्देशक तत्व भी कहते हैं कि राज्य एवं केन्द्र सरकारें महिलाओं के जीवन की गुणवत्ता सुधारने की दिशा में प्रयास करेंगे। समान कार्य हेतु समान वेतन भी प्रस्तावित है।

१९९४ में संविधान के ७३ वें, ७४वें संशोधन के माध्यम से स्थानीय चुनावों में महिलाओं हेतु ३३ प्रतिशत सीटें आरक्षित की गई हैं। लोकसभा एवं विधान सभा में ३३ प्रतिशत सीटों हेतु हम प्रतिबद्ध हैं। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी 'अशोक के फूल' २१ नामक ललित वैचारिक निबंध में लिखते हैं–

''सब कुछ में मिलावट है। सब कुछ अवि शुद्ध है।
शुद्ध है तो केवल मानव की जिजीविषा''।

अतः यदि हम इच्छा शक्ति के साथ, समाज को प्रगति पथ पर समावेशी एवं सतत विकास के साथ अग्रसर करना चाहते हैं तो दोनों पंखों से ही उड़ान भरना होगा। अब 'राम' एवं 'राधा' दोनों को समान अवसर के साथ आगे बढ़ना होगा। अब शांति से विष पीने वाली मीरा नहीं, विद्रोह करने वाली द्रौपदी चाहिए। रचनाकार की पंक्तियाँ प्रेरित करती हैं–

तेरे माथे पर ये आँचल, बहुत खूब है लेकिन,
तू इस आँचल को परचम बना लेती तो अच्छा था।

भारत सरकार ने २००१ को महिला–सशक्तिकरण वर्ष घोषित किया। आज दो दशक बाद सशक्तिकरण की दिशा में क्या अपेक्षित प्रगति हुई हैं? सरकारी तथ्य ही इस प्रगति का पर्दाफाश करते हैं। १९०१ में १००० पुरूषों पर ९७२ महिला, १९९१ में १००० पु. पर ९२७ महिला, २००१ में १००० पु. पर ९३३ महिलाएँ। प्रश्न यह है कि ९७ स्त्री कम क्यों है? क्या पुरूषों की क्षमता की तुलना में महिलाओं के शरीर में प्रतिरोधक क्षमता कम हैं? परन्तु मेडिकल सांइस यह कहता है कि जैविक धरातल पर पुरूषों में ही प्रतिरोधक क्षमता कम होती है। फिर ये कम क्यों हैं? इस प्रश्न का उत्तर क्या आधुनिक समाज को देना चाहिए?

भ्रूण हत्या का सच एक संवेदनशील कलम के माध्यम से देखा जा सकता है–

वे एक आदर्श हिंदू हैं,
उनकी कृष्ण लीला साकार है।
सात लड़कियों को पैदा होते ही मार चुके हैं।
एक कृष्ण–कन्हैया का इंतजार हैं।
त्रृगवेद का सार है.....२२

''आ नो भद्राः क्रतवो यंतु, विश्वतः''

अर्थात् विश्व की सभी दिशाओं से श्रेष्ठ विचार हमारे मस्तिष्क में आएँ। छठी शताब्दी ईसा पूर्व में महात्मा बुद्ध द्वारा अपने संघ का द्वार महिलाओं हेतु खोला जाना स्त्रियों की बौद्धिक, सामाजिक एवं धार्मिक चेतना को ही रेखांकित करता है। यह प्रमाण है कि स्त्रियाँ बौद्धिक संपदा में पुरूषों से कम नहीं हैं।

इतिहास का सत्य एवं स्वतंत्रता आंदोलनः मध्यकाल में दो प्रसिद्धमहिला शासक रजिया सुल्तान (१२३६–४०) तथा अकबर के समकालीन गोंड शासिका रानी दुर्गावती के बारे में इतिहासकारों ने भी माना है कि इनकी शासन व्यवस्था, तुलनात्मक रूप से बेहतर रही है। समकालीन उदाहरणों में इंदिरा गांधी, शेख हसीना, सिरिमावो भंडारनायके, द्रौपदी मुर्मु, एंजेला मर्केल जैसी महिला राजनेता उदाहरण हैं।

स्वतंत्रता आंदोलन में भी दुर्गा देवी वोहरा, श्रीमती सरोजनी नायडू, एनी बेसेंट, अरूणा आसफ अली जैसी महिलाओं ने राष्ट्रीय हित हेतु, निजी हित समर्पित कर दिया। माना जा सकता है कि यदि महिलाएँ समाज–अर्थ एवं धर्म का नेतृत्व करती तो निश्चित रूप से हिंसा एवं युद्ध कम होते तथा प्रेम–सहयोग–समन्वय आधारित समाज संरचना का निर्माण होता।

परंतु आज हम एक साथ आधुनिकता एवं रूढ़िवादिता दोनों की ओर प्रगतिशील दिखाई देते हैं। चांद एवं मंगल की तरफ बढ़ते कदम भी हैं, वही निर्भया कांड जैसी वीभत्सता की आवृत्ति भी।

रवीन्द्र नाथ टेगोर मानते हैं कि– ''आधुनिकता पोशाक में नहीं, विचारों में होती है। २३

डॉ. अंबेडकर मानते हैं कि–''मैं किसी समुदाय के विकास का आकलन उस समुदाय की स्त्रियों द्वारा प्राप्त किए गए विकास के परिणाम से करूँगा।'' ग्रे ओल्डमैन भी मानते हैं कि–''साधारणतः मैने देखा है कि महिलाएँ आध्यात्मिक, भावनात्मक, और प्रायः शारीरिक रूप से पुरूषों से अधिक मजबूत होती हैं''।

समकालीन चिंतन एवं भविष्यः समकालीन नारीवादी चिंतक डॉ. अनामिका सरल शब्दों में लिंग भेद को व्यक्त करती हैं–

राम पाठशाला जा,
राधा खाना पका
राम मिठाई खा,
राधा झाड़ू लगा,
राम यह तुम्हारा कमरा है।
राधा पूछती है– मेरा कमरा?
माँ का उत्तर है– बेटी, हवा,
धूप और पानी होती है,
इसका कोई घर नहीं होता।''

आज २१वीं सदी में भी नारी, अपने अधिकार सहित एक 'अदद घर' की तलाश में है।

निश्चित रूप से महिला सशक्तिकरण एक संपूर्ण जीवन दर्शन है। स्त्री विमर्श, एक गंभीर राष्ट्रीय–सामाजिक–धार्मिक–आर्थिक–भाषायी एवं सांस्कृतिक विमर्श का ज्वलंत विषय है। स्वामी विवेकानंद से लेकर सभी चिंतकों ने माना है कि–

''एक पंख (केवल पुरूष) से समावेशी
प्रगति की उड़ान संभव नहीं है।''

'हम भारत के लोग' भारतीय संस्कृति के अर्द्धनारीश्वर की संकल्पना के सकारात्मक स्वप्न को संरक्षित करने हेतु प्रतिबद्धता व्यक्त करते हैं।

संदर्भ सूची

- प्रसाद जयशंकर, कामायनी समीक्षा, १९९७, अनीता प्रकाशन, दिल्ली
- Gramsci Antonio, selections from the prison note book, 2015, Aakar Books, delhi
- बोउवार द सिमोन, २०२०, द सेकंड सेक्स का नारीवाद में योगदान, विकीपीडिया
- मानस रामचरित, संबत २०६९, हनुमान प्रसाद पोददार, गीता प्रेस, गोरखपुर
- पुतुल निर्मला, २००५, भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली
- हेगेल फ्रेडरिक, २०२४, Science of logic, ब्रिटानिका, दिल्ली
- पुतुल निर्मला, २००५, भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली
- पुतुल निर्मला, २००५, भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली
- यशपाल, २०१०, दिव्या, लोकभारती प्रकाशन, दिल्ली
- यशपाल, २०१०, दिव्या, लोकभारती प्रकाशन, दिल्ली
- राष्ट्रीय अपराध रिकार्ड ब्यूरो, NCRB की रिपोर्ट, २०२२
- लोहिया राममनोहर, जाति और योनि के कटघरे, २००५, अनामिका प्रकाशन, दिल्ली
- गुप्त मैथिली शरण, भारतभारती, १९९९ साकेत प्रकाशन, झांसी
- रेणु फणीश्वर नाथ, मैला आँचल, १९८४, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
- खुसरो अमीर, अमीर खुसरो का काव्य, १९२१ नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी
- विद्यापति की पदावली, २०२१, संपादक डॉ. नरेन्द्र झा, अभिव्यक्ति : इलाहाबाद

- जायसी, मलिक मोहम्मद, पद्मावत २०१०, वासुदेव शरण अग्रवाल, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
- शुक्ल रामचंद्र, भ्रमरगीत सार, २०००, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी
- गुप्त मैथिली शरण, यशोधरा, २०१४, साहित्य सदन, दिल्ली
- पंत सुमित्रानदंन, १९००, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
- द्विवेदी हजारी प्रसाद, निबंध, चुने हुए निबंध, २०२३, किताब घर प्रकाशन, दिल्ली
- सूक्त ऋगवेद, १९९८, मोतीलाल वनारसी दास, प्रकाशक, दिल्ली
- ठाकुर रवीन्द्र नाथ, २०२३, दैनिक जागरण, दिल्ली